फिर से मिला मां का प्यार

दिनेश विजयवर्गीय

नंदनवन में एक हरे भरे सघन वृक्ष पर एक चिड़ा चिड़ी रहते थे। उनके तीन छोटे बच्चे एक भाई दो बहन दिन में दूर-दूर तक के सुहावने दृश्य देखते रहते और हंसी मजाक भरी बातों में दिन भर बिताते। इन बच्चों के माता-पिता जंगल में दूर तक नदी किनारे जाकर भोजन सामग्री जुटाते। बच्चे अभी कुछ बड़े हो समझने ही लगे थे कि उनकी मां की एक दुर्घटना में मौत हो गई। बच्चे मां बिना दुखी रहने लगे। पिता भी अपने बच्चों के साथ दुख भरे दिन काटने लगा।

समय बदलते देर नहीं लगती। एक दिन चिड़ा अपने बच्चों के लिए खिलाने के लिए दाना लेकर पास के गांव से खुशी-खुशी लौटा। उस दिन वह अकेला नहीं था। साथ में एक सुंदर सी चिड़िया भी थी जो बच्चों की नई मां थी। पूरे परिवार में दिन फिर से खुशी भरे कटने लगे। चिड़ा भी यह देख प्रसन्नता था कि बच्चों को पुनः मां प्यार मिलने लगा है।

अभी कुछ समय बीता था की चिड़िया का पहली बार अपने बच्चों की मां बनने का वक्त आ गया। चिड़ा खुश होकर सोचने लगा कि बच्चों को भी नए भाई बहनों के संग खेलने का अवसर मिलेगा।

इधर अब पड़ोसियों को चिड़िया की मां बनने वाली बात मालूम हुई तो वे चिड़ी के मन में बच्चों के प्रति कटुता भरने लगे। चिड़ी को भी अपने होने वाले बच्चों की सुविधा में यह बच्चे रुकावट लगने लगे। अब वह हर दिन इन बच्चों को दूर करने की योजना सोचने लगी। चिड़ी सुरक्षित योजना बनाने में व्यक्त होने लगी। इधर बच्चों को भी मां का स्नेह प्यार मिलना बंद हो गया। चिड़े को भी चिड़िया की उदासी अखरने लगी। पर वह इसका कारण समझ नहीं पाया।

आखिर वह दिन भी आ गए जब चिड़िया ने चिड़े को अपनी योजना के अनुसार स्पष्ट कह दिया कि अब बच्चों को वह कहीं जंगल में छोड़ आए। चिड़े ने चिड़िया की कटुता पूर्ण बातें सुनी तो उसे बड़े दुख हुआ। उसे अपनी पहली वाली पत्नी की याद आई। कितना प्यार करती थी वह अपने बच्चों से।

इधर चिड़िया रोज ही बच्चों को लेकर अपने परिवार के सुखी वातावरण में जहर घोलने लगी। आखिर एक दिन चिड़िया ने चिड़े को धौंस दे डाली , 'यदि कल सुबह तक इन बच्चों को दूर जंगल में नहीं ले जाओगे तो मैं घर से सदा के लिए चली जाऊंगी।' चिड़िया की इस चेतावनी से चिड़ा मजबूर हो गया ,अपने हाथों से अपना परिवार उजाड़ने को।

अगला दिन बच्चों के जीवन में परिवार से सदा के लिए बिछुड़ने का अंतिम दिन बनकर आया। चिड़े ने तीनों बच्चों को जंगल के लिए यह कहकर अपने साथ कर लिया कि 'आज तुम्हें

अच्छे स्वादिष्ट फल खाने को मिलेंगे। कई अद्भुत चीजें और बरसाती सुहावना मौसम देखने को मिलेगा।' बच्चों को क्या पता था कि जंगल जाने की खुशी उनके जीवन में एक अनचाहा दुख घोल देगी।

जंगल में कुछ छोटे-बड़े वृक्ष थे। जमीन पर दूर-दूर तक हरी और लंबी बेलें फैली पड़ीं थीं। पूरे वातावरण में हरियाली छाई हुई थी। यहां आकर बच्चे खुश हो गए। बच्चों को इन्हीं हरे भरे पेड़ों की भूल भुलैया में दाना लेकर आने का बहाना बना ,कभी नहीं लौटने वाली यात्रा में अपने घर की ओर लौटने लगा।

पिता की प्रतीक्षा करते लम्बा समय हो गया। इधर आंधी के साथ बारिश होने लगी और तेज आवाज के साथ बिजली कड़ने लगी। बच्चे इस वातावरण से डरने लगे। बच्चों को पास एक अन्य विशाल में छायादार वृक्ष स्थान मिल गया। तीनों भाई-बहन वहां सुरक्षित स्थान पर चले गये। कुछ राहत मिली। पर अब भी दोनों बहनें किसी अनहोनी से डर रहीं थीं। भाई उन्हें सब कुछ ठीक हो जाएगा का भरोसा देकर समझाने लगा। दुखी होने से कुछ नहीं होगा। धीरज रखने से कोई अच्छा रास्ता निकलेगा। सुबह होने की प्रतीक्षा करना चाहिए। ताकि हम फिर से अपने भविष्य के सुनहरे सपनों को देख सकें।

सच में अगले दिन की सुबह उनके जीवन में खुशहाली बन कर आई। पास के नीम के पेड़ पर एक चिड़िया रह रही थी। उसकी दृष्टि उन बच्चों पर पड़ी। उसे यह अपने ही बच्चों की तरह लगने लगे। दो दिन पहले जब वह अपने बच्चों के लिए चुग्गा लेकर पहुंची तो उसने बहुत दुखद दृश्य देखा। एक काला लंबा सांप उसके तीनों बच्चों को खा रहा था। वह चीं चीं करते गहरा दुख प्रकट करती रही। आज वह अपने बच्चों की याद में निराश मन से बैठी हुई थी।

चिड़िया नीम के पेड़ से उड़कर सामने वाले पेड़ पर रह रहे तीनों बच्चों के पास जाकर अपना स्नेह प्यार जताकर उनसे बात करने लगी। बच्चों ने चिड़िया को और चिड़िया ने बच्चों को अपनी दुख दर्द वाली बात सुनाई।

चिड़िया ने सहानुभूति प्रकट करते हुए उनके प्रति विश्वास भरा अपनापन जताया। उसने कहा 'बच्चों! मैं भी अकेली रहती हूं।अब तुम मेरे साथ मेरे बच्चों की तरह रहो और मैं तुम्हारी मां की तरह।' चिड़िया की बात सुन बच्चे खुश होकर बोलने लगे 'हमारी मम्मी ! हमारी मम्मी!' चिड़िया अपने साथ उन बच्चों को एक सुंदर बगीचे में ले गई। वहां खूबसूरत कई किस्म के रंग बिरंगे फूल खिले हुए थे। मां का प्यार पाकर धीरे-धीरे तीनों बच्चे ,खेलते बड़े हो रहे थे। वे मां के साथ आनंदमय में जीवन जी कर थोड़ा-थोड़ा इधर-उधर उड़ने लगे थे।